दुःख का अधिकार - यशपाल

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक - दो पंक्तियों में दीजिए -

1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है ?

ज. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा ,अधिकार और आर्थिक स्थिति का पता चलता है।

2. खरबूज़े बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूज़े क्यों नहीं खरीद रहा था।

ज. खरबूजे बेचनेवाली स्त्री का बेटा मरे हुए एक दिन ही हुआ था। इसलिए लोग सूतक मानकर उससे खरबूजे नही खरीद रहे थे।

3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा ?

ज. उस स्त्री को देखकर लेखक के मन में सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी। उसके दुख का कारण जानने केलिए बेचैन हो उठा।

4. उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था ?

ज. खेत में पके खरबूजे चुनते समय साँप के काटने से उस स्त्री के लड़के की मृत्यु हुई।

5. बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नही देता ?

ज. बुढ़िया के परिवार में एकमात्र कमाने वाला बेटा मर गया था। पैसे वापस न मिलने के डर से कोई उसे उधार नही देता।

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -

1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है ?

ज. मनुष्य के जीवन में पोशाक का बड़ा महत्व है। किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा, अधिकार और आर्थिक स्थिति का पता चलता है। उसके व्यक्तित्व का अंदाज़ा लगाते हैं। पोशाकें व्यक्ति को ऊँच-नीच की श्रेणी में बांट देती है।

2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है ?

ज. जब हम किसी दुखी व्यक्ति के साथ सहानुभूति प्रकट करनी होती है, तब उसे छोटा समझकर उससे बात करने में संकोच करते हैं। उसके साथ सहानुभूति तक प्रकट नहीं कर पाते हैं। हमारी पोशाक उसके समीप जाने में बंधन और अड़चन बन जाती है।

3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नही जान पाया ?

ज. खरबूजे बेचने वाली स्त्री की स्थिति देखकर लेखक के मन में सहानुभूति उत्पन्न हुई थी। फुटपाथ पर बैठकर कारण पूछने से उसकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचती। लेखक के पोशाकों से उस स्त्री के रोने कारण जान नहीं पाया।

4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?

ज. भगवान शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन में कछियारी करता था। वह अपनी जमीन पर हरी सब्जियों एवं खरबूजे जैसे फल उगाया करता था और उन्हें बेचता था। इस तरह भगवाना अपने परिवार का निर्वाह करता था ।

5. लड़के के मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी ?

ज. बुढ़िया बहुत गरीब थी। लड़के के छोटे-छोटे बच्चे भूख से परेशान थे। बहू को तेज़ बुखार था। इलाज के लिए भी पैसा नहीं था। धन के अभाव के कारण वह दूसरे ही दिन खरबूज़े बेचने चल पड़ी।

6. बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई ?

ज. लेखक बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की बात सोचने लगा। दोनों के शोक मनाने का ढंग अलग था। धनी परिवार के होने के कारण उसके पास शोक मनाने का असीमित समय था। अभागिन बुढ़िया के पास शोक, गम मनाने का अधिकार नही था।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए -

1. बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

ज. बाज़ार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें कह रहे थे। कोई घृणा से थूककर बेहया कह रहा था। कोई उसकी नीयत को दोष दे रहा था। कोई कमीनी, रोटी के टुकड़े पर जान देने वाली , रिश्तों का कोई मतलब न होनेवाली , दूसरों के धर्म ईमान का खयाल बेखातर करने वाली कह रहा था।

2. पास - पड़ोस की दूकान से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?

ज. पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का जवान बेटा सांप के काटने से मर गया है। वह परिवार में एकमात्र कमाने वाला था। उसके घर का सारा सामान बेटे को बचाने में खर्च हो गया। घर में, पोता - पोती भूख से बिलख रहे थे। इसलिए बुढ़िया रोते - रोते खरबूजे बेचने बाजार आई है।

3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया ने क्या क्या उपाय किए ?

ज. लड़के की मृत्यु होने पर बुढ़िया बावली सी हो गयी। ओझा को बुला लायी। झाड़ना-फूंकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। घर के आटा और अनाज दान दक्षिणा में समाप्त हो गए। परन्तु उसका बेटा बच न सका।

4. लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाजा कैसे लगाया ?

ज. लेखक बुढ़िया के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की बात सोचने लगा। दोनों के शोक मनाने का ढंग अलग था। धनी परिवार के होने के कारण उसके पास शोक मनाने को असीमित समय था। अभागिन बुढ़िया के पास शोक, गम मनाने का अधिकार नही था।

5. इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है ? स्पष्ट कीजिए।

ज. इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' पूरी तरह से सार्थक सिद्ध होता है। दुःख प्रकट करने का अधिकार व्यक्ति की परिस्थिति के अनुसार होता है। गरीब बुढ़िया और संभ्रांत महिला दोनों का पुत्र शोक समान था। परन्तु संभ्रांत महिला के पास धन , सुविधाएं थीं। इसलिए वह दुःख मना सकी। परन्तु बुढ़िया बहुत गरीब थी। उसके पास न सुविधाएं थीं न समय। वह दुःख न मना सकी। उसे दुःख मनाने का अधिकार नहीं था।

(ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

ज. यहाँ लेखक ने पोशाक की तुलना वायु की लहरों से की है। जिस प्रकार पतंग के कट जाने पर वायु की लहरें उसे कुछ समय के लिए उड़ाती रहती हैं। एकाएक धरती से टकराने नहीं देतीं। ठीक उसी प्रकार किन्हीं खास परिस्थतियों में पोशाक हमें नीचे झुकने से रोकती हैं।

2. इनके लिए बेटा-बेटी, खसम लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

ज. गरीबों को कमाने के लिए रोज घर से निकलना ही पड़ता है। परन्तु लोग कहते हैं उनके लिए रिश्ते-नाते नही होते हैं। वे सिर्फ पैसों के गुलाम होते हैं। रोटी कमाना उनके लिए सब कुछ कहते हैं।

3. शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

ज. शोक करने, गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए। अमीर लोगों के पास दुख मनाने का समय और सुविधा दोनों होती हैं। इसके लिए वह दुःख मनाने का दिखावा भी कर पाता है और उसे अपना अधिकार समझता है। लेकिन गरीब विवश होता है। वह रोज़ी रोटी कमाने की उलझन में ही लगा रहता है। उसके पास दुःख मनाने का न तो समय होता है और न ही सुविधा होती है। इसलिए उसे दुःख का अधिकार भी नहीं होता है।

भाषा-अध्ययन

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए –

ईमान - ज़मीर, विवेक

बरकत - वृद्धि, बढ़ना

बदन - शरीर, तन, देह

अंदाज़ा - अनुमान

बेचैनी - व्याकुलता, अधीरता

गम - दुख, कष्ट, तकलीफ

दर्जा - स्तर, कक्षा

ज़मीन - धरती, भूमि, धरा

ज़माना - संसार, जग, दुनिया

3. निम्न लिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द - युग्मों को छाँटकर लिखिए।

उदाहरण : बेटा - बेटी

पास - पड़ोस

झाडना - फूँकना

दुअन्नी - चवन्नी

पोता - पोती

दान - दक्षिणा

4. पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए-

बंद दरवाजे खोल देना, निर्वाह करना, भूख से बिलबिलाना, कोई चारा न होना, शोक से द्रवित हो जाना।

बंद दरवाज़े खोल देना - इसका अर्थ है जहाँ पहले सुनवाई नहीं होती थी, वहाँ अब बात सुनी जाती है। जहाँ पहले तिरस्कार होता था, वहाँ अब मान-सम्मान होता है। यदि आदमी के कपड़े अच्चे हों तो लोग कपड़े देखकर स्वागत सत्कार करते हैं।

निर्वाह करना - पेट भरना, घर का खर्च चलाना।

भूस्व से बिलबिलाना - भूख के कारण तड़पना भगवाना के बच्चे अगले ही दिन भूख से तड़पने लगे।

कोई चारा न होना - कोई उपाय न होना। भगवाना की माँ के पास अपने पोता-पोती का पेट भरने के लिए तथा बहु की दवा-दारू करने के लिए पैसे नहीं थे। कोई उधार भी नहीं देता था। अतः उसके पास खरबूजे बेचने के सिवाय और कोई चारा न था।

शोक से द्रवित हो जाना- दुःख को देखकर करुणा से पिघल जाना। जब लोगों ने लेखक के पड़ोस में रहने वाली संभ्रांत महिला के दुःख को देखा तो वे शोक से द्रवित हो गए।

5. निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए--

(क) छन्नी – ककना, अढाई – मास, पास – पड़ोस, मुँह – अँधेरे, झाड़ना – फूँकना

छन्नी – ककना

गरीब बुढ़िया को अपने बेटे का कफ़न खरीदने के लिए अपनी छन्नी- ककना भी बेचना पड़ा

अढ़ाई – मास

संभ्रांत महिला पुत्र शोक में अढाई मास तक पलंग पर रही।

पास – पड़ोस

लेखक ने पास पड़ोस के दुकानदारों से गरीब महिला के दुःख का कारण जाना।

दुअन्नी – चवन्नी

महिला को गरीब जानकर किसी पड़ोसी ने उसे दुअन्नी चवन्नी भी उधार न दी।

मुँह – अँधेरे

अखबार बेचने वाले मुँह अँधेरे ही चलकर अखबार बाँट आते हैं।

झाड़ना – फूँकना

ओझा साँप के काटे का इलाज झाड़-फूँक करके करता है।

(स्व) फफक – फफकर, बिलख – बिलखकर, तड़प – तड़पकर, लिपट – लिपटकर

फफक – फफककर

बुढ़िया स्वरबूजे बेचते समय फफक-फफककर रो रही थी।

बिलख – बिलखकर

पुत्र को मृत देखकर उसकी माँ बिलख-बिलखकर रोई।

तड़प – तड़पकर

साँप से काटे जाने पर भगवाना ने तड़प-तड़पकर प्राण दे दिए।

लिपट – लिपटकर

दुखियारी माँ अपने मृत बेटे के शरीर से लिपट लिपटकर रोई।

https://hamari-hindi.com